गन्ना कृषक माह जनवरी में क्या करें!

1– शरद्कालीन नवलख एवं गन्ना फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें ताकि गन्ना फसल पाला के कुप्रभाव से बच सके। अतः फसल की उत्पादकता में वृद्धि हेतु शरद्कालीन सिंचाई आवश्यक है।

2– शरद्कालीन गन्ने के साथ विभिन्न अन्तः फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई, गुड़ाई तथा उर्वरक का प्रयोग करें। आलू, लाही, सब्जियॉ तैयार हो गयी हों तो इन फसलों को काट लें। आवश्यकतानुसार गन्ना फसल में सिंचाई से पहले पूर्व अंकुरित पौधों से रिक्त स्थान भरें।

3– शीघ्र व मध्य देर से पकने वाली प्रजातियों का पेड़ी गन्ना तथा शीघ्र पकने वाली प्रजातियों का शरद्कालीन बावग गन्ना जमीन की सतह से काटकर चीनी मिल को आपूर्ति करें। गन्ना कटाई व चीनी मिल आपूर्ति में 24 घण्टे से अधिक समय न लगायें।

4– बसन्तकालीन गन्ने की बुवाई का उपयुक्त समय पूर्वी उत्तर प्रदेश में मध्य जनवरी से फरवरी तक, मध्य क्षेत्र में मध्य फरवरी से मध्य मार्च तक तथा पश्चिमी क्षेत्र से मध्य फरवरी से मार्च के अन्त तक है। अतः पूर्वी उ0प्र0 के किसान लाही आदि से खाली हुये खेत में कार्बनिक खादों का प्रयोग करते हुये खेत की तैयारी करें।

5– बसन्तकालीन बुवाई से पूर्व मृदा परीक्षण कराकर खादीय संस्तुतियों के अनुसार उर्वरक की व्यवस्था करें एवम् उनका बुवाई के समय उपयोग सुनिश्चित करें। अन्यथा सामान्य परिस्थितियों में 180 कि0ग्रा0 नत्रजन, 60 कि0ग्रा0 फास्फोरस, 40 कि0ग्रा0 पोटाश व 25 कि0ग्रा0 जिंक सल्फेट प्रति हे0 की दर से प्रयोग करें।

6– खेत की तैयारी से पूर्व गन्ना बीज की व्यवस्था करें। कुल बावग गन्ना क्षेत्रफल का 1/3 भाग शीघ्र पकने वाली प्रजातियों के अन्तर्गत रखें। स्वीकृत प्रजातियों का चुनाव करें। बीज गन्ना में पानी की मात्रा पर्याप्त बनाये रखने हेतु काटने से पूर्व उसमें पानी लगायें। दो या तीन ऑख का टुकड़ा काटकर उपचारित करने के पश्चात् बुवाई करें ।

7– बीज उपचार हेतु पारायुक्त रसायन एगलाल– 3% (560 ग्राम), एरीटान– 6% (280 ग्राम) या एम0ई0एम0सी0 6% (280 ग्राम) या बाविस्टिन (110 ग्राम) को 100–125 लीटर पानी में घोलकर टुकड़ों को उपचारित करें। बुवाई के समय दीमक व अंकुरबेधक नियंत्रण हेतु फोरेट 10 जी0–25 कि0ग्रा0 या सेविडॉल 4:4 जी0–25 कि0ग्रा0 या लिन्डेन 6 जी–20 कि0ग्रा0/हे0 या गामा बी0एच0सी0 (20 ई0सी0) 5 लीटर/हे0 1875 लीटर पानी में मिलाकर प्रयोग करें।

आलू, अरहर, गेहूँ, धान । गन्ना बोयें चतुर किसान ।।